रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 18
पुरातत्व का बाइबिल इतिहास से संबंध

चतुर्थ. पुरातत्व का बाइबिल इतिहास से संबंध

हम आज दोपहर एक नए खंड, रोमन अंक IV, "बाइबल इतिहास से पुरातत्व का संबंध" पर आए हैं। मैंने इस खंड को उत्पत्ति 11 की हमारी चर्चा और उत्पत्ति 12 की हमारी चर्चा और उसके बाद के बीच में डाला है क्योंकि जब आप इब्राहीम के साथ उत्पत्ति 12 पर पहुँचते हैं तो आप उस समय की अवधि में होते हैं जहाँ पुरातत्व का बाइबिल सामग्री पर प्रभाव पड़ता है। इब्राहीम के समय से पहले आप वास्तव में उस अवधि में हैं जहां बाइबिल संबंधी डेटा से संबंधित अतिरिक्त बाइबिल ऐतिहासिक डेटा नहीं है। इसलिए मुझे लगता है कि इस बिंदु पर पुरातत्व और इसकी कुछ विधियों, लाभों और उपयोगों पर थोड़ा विचार करना अच्छा होगा।

ए. बाइबिल पुरातत्व, इसके इतिहास और तरीकों का एक सामान्य सर्वेक्षण
बी. बाइबिल के ऐतिहासिक कथनों के आकलन में पुरातत्व की भूमिका

आप डॉ. एलन मैकरे की किताब पढ़ रहे हैं और वास्तव में रोमन अंक IV के बड़े अक्षर A पर "बाइबिल पुरातत्व, इसके इतिहास और तरीकों का एक सामान्य सर्वेक्षण" है। मैं कक्षा व्याख्यान में ऐसा नहीं करने जा रहा हूँ। मैं इसे आपके मैकरे पुस्तिका को पढ़ने के लिए छोड़ रहा हूं ताकि कम से कम पुरातत्व अनुसंधान के इतिहास और तरीकों का एक संक्षिप्त सारांश भरा जा सके। मैं जो कहना चाहता हूं वह है बी, "बाइबल के ऐतिहासिक कथनों के आकलन में पुरातत्व की भूमिका", क्योंकि मुझे लगता है कि कार्यप्रणाली से निपटना महत्वपूर्ण है। हम पुरातत्व से कैसे निपटते हैं? हमारे बाइबिल अध्ययन के संबंध में इसका क्या कार्य है? मैं वहां बी से शुरुआत करूंगा, "बाइबल के ऐतिहासिक कथनों के आकलन में पुरातत्व की भूमिका।" निश्चित रूप से पुरातत्व ने बाइबिल के बारे में हमारी समझ को बढ़ाने के लिए बहुत कुछ किया है, मुझे नहीं लगता कि इसके बारे में कोई सवाल है। पुरातात्विक अनुसंधान के परिणामों के कारण आज हम बाइबिल के समय के बारे में सौ साल पहले की तुलना में बहुत अधिक जानते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि

बाइबिल के अध्ययन में पुरातात्विक अनुसंधान की भूमिका को उचित परिप्रेक्ष्य में रखना महत्वपूर्ण है। इससे मेरा तात्पर्य यह है कि पुरातत्व क्या कर सकता है और क्या नहीं? मुझे लगता है कि कभी-कभी पुरातत्व को बहुत अधिक महत्व दिया गया है । यह महत्वपूर्ण है और मैं इसे कम नहीं करना चाहता, लेकिन कभी-कभी पुरातत्व को बहुत अधिक महत्व दिया गया है और यह दो बिल्कुल अलग-अलग दृष्टिकोणों से किया गया है।

आप पाएंगे कि अक्सर आलोचनात्मक विद्वान, जिनके पास पवित्रशास्त्र की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में कोई दृष्टिकोण नहीं है, पुरातत्व का उपयोग यह सुझाव देने के लिए करेंगे कि बाइबिल के ग्रंथों में जो कथन पुरातात्विक निष्कर्षों द्वारा पुष्टि नहीं किए गए हैं वे संदिग्ध हैं और कुछ मामलों में ऐसा कहा जाता है कि पुरातात्विक खोजों ने साबित कर दिया है कि बाइबल ग़लत है और जो कुछ उसमें दर्ज है वह वास्तव में घटित नहीं हुआ था। यह आलोचनात्मक दृष्टिकोण के सिक्के का एक पहलू है जहां वे या तो किसी बयान को संदिग्ध मानते हैं या कहते हैं कि पुरातात्विक अनुसंधान के निष्कर्षों के कारण ऐतिहासिक अशुद्धियाँ हैं।

दूसरी ओर, आपके पास रूढ़िवादी विद्वान हैं जिन्होंने बाइबिल की सटीकता के प्रमाण के रूप में पुरातात्विक अनुसंधान का उपयोग किया है। ऐसी कई पुस्तिकाएँ हैं जो बताती हैं कि पुरातत्व ने बाइबल को सत्य साबित कर दिया है। कुछ उदाहरणों में, मुझे लगता है कि पुरातात्विक साक्ष्यों ने बाइबिल के कथनों की पुष्टि और पुष्टि की है। हालाँकि, ऐसे मामले भी हैं, जहाँ रूढ़िवादी विद्वानों ने दावा किया है कि पुरातत्व ने हमें दिखाया है कि बाइबल सच है, जब बाद में पता चला कि पुरातात्विक डेटा की इस विशेष व्याख्या को संशोधित, परिवर्तित या उलट दिया गया है। जिस उपयोग के लिए इसे तब रखा जा रहा था वह अब वास्तव में मान्य नहीं है क्योंकि डेटा की व्याख्या कुछ ऐसी थी जो संभवतः संदिग्ध थी या बाद में, अधिक सबूतों के साथ, डेटा की पुनर्व्याख्या या संशोधन किया गया है।

इसलिए, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि हम पुरातात्विक अनुसंधान को उस स्थिति तक न ले जाएं जहां "वैज्ञानिक परिणाम" अनुचित तरीके से पवित्रशास्त्र पर शासन करते हैं, खासकर पवित्रशास्त्र की व्याख्या में। पुरातात्विक निष्कर्ष हमेशा ऐतिहासिक व्याख्या के प्रश्नों पर अंतिम शब्द प्रदान नहीं करते हैं और मुझे लगता है कि वहां एक गलत धारणा है। लोग अक्सर

पूछते हैं: "क्या सच में ऐसा हुआ था या नहीं?" फिर प्रस्ताव रखें, "आइए पुरातत्वविद् के पास चलें, आइए पुरातत्वविद् हमें इसका उत्तर बताएं।"

कई मामलों में इसका एहसास करना ज़रूरी है, हर मामले में नहीं, लेकिन कई मामलों में पुरातत्वविद् अपने निष्कर्षों में एकमत नहीं होते। दूसरे शब्दों में, एक पुरातत्वविद् कुछ निष्कर्षों की व्याख्या के संबंध में यह कहने जा रहा है कि इसका यही अर्थ है और दूसरा पुरातत्वविद् कुछ और कहने जा रहा है। पुरातत्वविदों द्वारा स्वयं डेटा की व्याख्या के कई मामलों पर एकमत नहीं है। तो ऐसा नहीं है कि किसी एकीकृत तरीके से पुरातत्व हमें कुछ बताता है। यह उससे भी अधिक जटिल है. ऐसा होने पर, मुझे लगता है कि हमें इस बात की समझ विकसित करने की आवश्यकता है कि पुरातत्व बाइबिल के अध्ययन और व्याख्या में सहायता के रूप में कैसे कार्य कर सकता है। यह वास्तव में उपयोगी हो सकता है लेकिन हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यह ऐसा कैसे कर सकता है, एक ओर इससे बहुत अधिक अपेक्षा किए बिना, या दूसरी ओर इसके महत्व को कम किए बिना। आप इसके साथ दोनों दिशाओं में जा सकते हैं। आपको बाइबिल की व्याख्या में पुरातात्विक डेटा कैसे कार्य कर सकता है, इसकी एक महत्वपूर्ण संतुलन प्रकार की समझ की आवश्यकता है। हमें पुरातात्विक खोजों से निष्कर्ष निकालने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है क्योंकि यह पवित्रशास्त्र से संबंधित है।

अब इसे ध्यान में रखते हुए, मैं आपका ध्यान दो चीजों की ओर आकर्षित करना चाहता हूं जो आपकी रूपरेखा शीट पर 1 और 2 के रूप में पोस्ट की गई हैं। मुझे लगता है कि यहां दो सिद्धांत हैं जो हमें सही परिप्रेक्ष्य प्राप्त करने में काफी मदद करते हैं। मुझे लगता है ये बहुत महत्वपूर्ण हैं. एक तो यह कि पुरातात्विक साक्ष्य आवश्यक रूप से बहुत खंडित प्रकृति के होते हैं। यह जो है उसके चरित्र के आधार पर, यह कभी पूरा नहीं होगा। यह बहुत खंडित है. दूसरे, कई मामलों में पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या केवल अस्थायी होती है।

1. पुरातात्विक साक्ष्य आवश्यकता के अनुसार प्रकृति में बहुत खंडित हैं

तो आइए नजर डालते हैं इन दो चीजों पर. पहला, "पुरातात्विक साक्ष्य आवश्यकता के अनुसार प्रकृति में बहुत खंडित हैं।" केवल अनुशासन की प्रकृति के कारण ही हम निश्चिंत हो

सकते हैं कि जहां तक पुरातात्विक साक्ष्य का संबंध है, हमारे पास किसी भी प्रश्न पर केवल उन साक्ष्यों का एक अंश ही उपलब्ध होगा जो हम अपने निपटान में रखना चाहते हैं। मैंने पहले जो उल्लेख किया था उसके कारण वह सिद्धांत महत्वपूर्ण है। ऐसे लोग हैं जो यह निष्कर्ष निकालेंगे कि बाइबिल का कोई कथन संदिग्ध है यदि इसकी पुरातात्विक डेटा द्वारा पुष्टि नहीं की गई है। अब यदि प्रकृति स्वाभाविक रूप से खंडित है, तो हमें ऐसी पुष्टिओं की मांग नहीं करनी चाहिए। इसलिए यह विचार कि कोई चीज़ संदिग्ध है क्योंकि हमारे पास इसका सबूत या सबूत नहीं है कि यह अमान्य है।

अब आपकी ग्रंथ सूची, पृष्ठ 12 में, पहली तीन प्रविष्टियाँ एडविन यामूची के कुछ लेख और पुस्तकें हैं जो ओहियो में मियामी विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं। वह एक इंजील इतिहासकार हैं जो प्राचीन निकट पूर्व के पुरातत्व में बहुत रुचि रखते हैं। अपने लेख "द स्टोन, स्क्रिप्ट्स एंड स्कॉलर्स" के साथ-साथ अगली पुस्तक द स्टोन्स एंड द स्क्रिप्चर्स के अध्याय चार में भी। और "पुरातात्विक पुष्टिकरण शास्त्रीय और बाइबिल परंपराओं में संदिग्ध तत्वों" पर लेख में, उन्होंने तर्क की एक पंक्ति विकसित की है जिसे मैं यहां अपनी चर्चा में उपयोग करना चाहता हूं और वह मूल रूप से पुरातात्विक साक्ष्य की खंडित प्रकृति है। वह निम्नलिखित बातें बताते हैं, जो कुछ बनाया गया है या लिखा गया है उसका केवल एक अंश ही जीवित रहता है। अब इसे कई तरीकों से चित्रित किया जा सकता है। पपीरी जैसी नाशवान सामग्रियाँ, जिनका उपयोग प्राचीन विश्व में कई उदाहरणों में लिखने के लिए किया जाता था, बस विघटित हो गई हैं और गायब हो गई हैं। यह टिकाऊ नहीं है. इसलिए कई मामलों में शिलालेख बचे नहीं हैं। यह उम्मीद करना उचित है कि इस्राएल और यहूदा के राजाओं ने मोआब के राजाओं के समान शिलालेखों के साथ पत्थर के स्तंभ बनवाए। हमारे पास मोआबी पत्थर है। परन्तु मोआब के राजा मेशा का उस पर एक शिलालेख था जो पाया गया। हमारे पास पेरिस के लौवर में उस पत्थर की प्रतियां हैं। इसलिए यह उम्मीद करना उचित है कि इस्राएल के राजाओं ने भी इसी तरह के शिलालेख बनाए होंगे लेकिन उनमें से कोई भी नहीं मिला है। यदि उन्होंने इन्हें बनाया भी है तो उन्हें अभी तक खोजा नहीं जा सका है अन्यथा वे नष्ट हो गए होंगे और समय के साथ गायब हो गए होंगे। इज़राइली स्टेले का

केवल एक टुकड़ा है जिसमें एक शब्द है, बस एक शब्द वाला एक छोटा सा टुकड़ा है जो कभी पाया गया है।

एक अन्य उदाहरण यह है कि नए नियम के युग में फ़िलिस्तीन में सैकड़ों आराधनालय थे, लेकिन 70 ईस्वी से पहले का केवल एक आराधनालय खोजा गया है, जो कैपेरनम में है, बाकी, जिनके बारे में हमें यकीन है कि कई थे, की खोज नहीं की गई है। अब इस तरह की चीज़ों के बहुत सारे चित्र हैं लेकिन जो बनाया गया है या जो लिखा गया है उसका केवल एक अंश ही बचा है।

आपको आराधनालय जैसी इमारतों के अवशेष न मिलने का एक कारण यह है कि प्राचीन दुनिया में लोगों के लिए पुरानी इमारत से सामग्री लेना और उसका उपयोग नई इमारत बनाने के लिए करना आम बात थी ताकि इमारत का स्रोत तैयार किया जा सके। सामग्री पिछली इमारतों से आती है और उन्हें बस उठाया और हटा दिया जाता है और कहीं और रख दिया जाता है और मूल इमारत का कोई निशान नहीं रहता है। फिर आपके पास क्षरण, क्षय और इस तरह की सभी प्राकृतिक शक्तियां हैं जो अपना विनाशकारी कार्य भी करती हैं। इसलिए जो बनाया जाता है और जो लिखा जाता है उसका केवल एक अंश ही बचता है।

2. कुछ साइटों का सर्वेक्षण और पहचान कर ली गई है

दूसरे, कनान या पवित्र भूमि में उपलब्ध स्थलों में से केवल एक अंश का ही सर्वेक्षण किया गया है जिसका अर्थ है कि उन्हें पुरातात्विक स्थलों के रूप में पहचाना गया है। 1944 में फ़िलिस्तीन राजपत्र में जॉर्डन के पश्चिम क्षेत्र में कुल लगभग 3000 स्थल और ट्रांस-जॉर्डन में कई सौ स्थल सूचीबद्ध थे, इसलिए 1944 में लगभग 3000 पहचाने गए पुरातात्विक स्थल थे। 1963 में ज्ञात साइटों की कुल संख्या लगभग 5000 तक बढ़ गई थी, मुख्य रूप से नेल्सन ग्लूक के सर्वेक्षणों के कारण, मुझे लगता है कि आपने 1963 में मैकरे में उनके बारे में पढ़ा था, 1966 और 1967 में नेगेव में, जो कि दक्षिण में है, कुछ सर्वेक्षण किए गए थे। लगभग 200 नई साइटें सामने आईं। फिर 1967/68 में उस क्षेत्र पर कब्जे के बाद गोलान हाइट्स में सर्वेक्षण हुए और वहां कुछ अतिरिक्त स्थल पाए गए। उस सर्वेक्षण के निदेशक मोशी काकाबी ने कहा, "यहूदिया के हमारे सर्वेक्षण में

लगभग 1200 साइटों का सर्वेक्षण किया गया, जिनमें से लगभग 20 से 30 प्रतिशत नई साइटें हैं जो पहले दर्ज नहीं की गई थीं। मेरा अनुमान है कि संभावित स्थलों में से एक तिहाई से अधिक को दर्ज नहीं किया गया था और युद्ध-पूर्व इज़राइल के अभी तक सर्वेक्षण न किए गए हिस्सों सहित एक संपूर्ण सर्वेक्षण कई वर्षों का प्रश्न है। तो आप देख सकते हैं कि यह स्थलों की एक विशाल संख्या है, निश्चित रूप से फ़िलिस्तीन में 3000 से अधिक पहचाने गए पुरातात्विक स्थल हैं ।

3. सर्वेक्षण किए गए स्थलों का केवल एक अंश ही खोदा गया है

3. सर्वेक्षण किए गए स्थलों का केवल एक अंश ही खोदा गया है। 1963 में पॉल लैप ने अनुमान लगाया कि फ़िलिस्तीन के 5000 स्थलों में से लगभग 150 स्थलों पर वैज्ञानिक उत्खनन किया गया है। आप देखते हैं कि वहां आप संख्याओं में जाना शुरू करते हैं और आप आसानी से यह अंदाजा लगा सकते हैं कि वहां भारी मात्रा में पुरातात्विक कार्य किया जा रहा है और किया जा रहा है, लेकिन क्षमता की तुलना में यह केवल एक छोटा सा अंश है। आप देखें 5000 स्थलों में से 150 स्थलों की खुदाई की जा चुकी है। 150 में से केवल 26 प्रमुख उत्खनन हैं जहाँ उन्होंने वास्तव में गहन कार्य किया है और उन मामलों में भी यह 100% नहीं है। दूसरे शब्दों में, केवल 26 प्रमुख उत्खनन हुए हैं । अब लैप का कहना है कि निश्चित रूप से रिकॉर्ड पर मौजूद कई साइटें व्यापक उत्खनन के लायक नहीं होंगी, लेकिन अगर चार में से केवल एक ही आशाजनक थी तो अब तक संभावित साइटों में से केवल दो प्रतिशत पर ही बड़ी खुदाई की गई है। तो आप देखते हैं कि जो कुछ बनाया या लिखा गया था उसका केवल एक अंश ही जीवित बचा है, उपलब्ध साइटों के एक अंश का सर्वेक्षण किया गया है और फिर सर्वेक्षण किए गए स्थलों के केवल एक अंश की खुदाई की गई है।

4. किसी भी उत्खनन स्थल के एक अंश की वास्तव में जांच की गई है

अब कुछ अपवादों को छोड़कर किसी भी उत्खनन स्थल के केवल एक अंश की ही वास्तव में जांच की गई है। निःसंदेह इसके कुछ अपवाद भी हैं। आपके पास कुमरान समुदाय जैसे छोटे, अल्पकालिक प्रकार के स्थल हैं जो अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र में हैं और लंबे समय तक बसे हुए नहीं थे।

इसकी पूरी तरह से खुदाई की जा चुकी है और आपके पास मृत सागर के पश्चिम में मसादा की साइट है जहां यहूदियों ने 73 ईस्वी के आसपास रोमनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। यह अल्पकालिक और छोटा था और इसकी लगभग पूरी तरह से खुदाई की जा चुकी है। लेकिन अधिकांश भाग में जब आप किसी साइट की खुदाई करते हैं तो आप पूरी साइट की पूरी तरह से खुदाई नहीं करते हैं। इसलिए कुछ अपवादों को छोड़कर, किसी भी उत्खनन स्थल के केवल एक अंश की ही वास्तव में जांच की गई है।

अब अल्पकालिक छोटी साइटों के अलावा इसके कुछ अपवाद उदाहरण के लिए मेगिडो हैं, जिनकी खुदाई 1925 और 1934 के बीच शिकागो विश्वविद्यालय के ओरिएंटल इंस्टीट्यूट द्वारा की गई थी। उस उत्खनन का विचार, जो एक प्रमुख उत्खनन था, मेगिडो की साइट लेना था, जो काफी अच्छे आकार की साइट थी, और पूरी तरह से पूरे टीले या " टेल " के माध्यम से परत दर परत काम करना था, जैसा कि उन्हें कहा जाता है। वे टीले के शीर्ष चार स्तरों को हटाने में सफल रहे लेकिन अंततः इसे छोड़ दिया गया क्योंकि ऐसा कुछ करना एक बहुत बड़ा उपक्रम था और उस पैमाने पर कुछ करने का प्रयास तब से नहीं किया गया है। लेकिन इसका मतलब यह है कि किसी भी खुदाई में महत्वपूर्ण खोजों का छूटना लगभग तय है क्योंकि वे जो करेंगे वह एक ऐसे खंड का चयन करेंगे जहां उन्हें लगता है कि शायद यहां शहर का कोई द्वार था या वहां कोई महत्वपूर्ण इमारत थी और वे उस स्थान पर खुदाई करेंगे। वे सही हो सकते हैं और वे ग़लत भी हो सकते हैं और वे चीज़ों को चूकने के लिए बाध्य हैं।

यामूची ने अपने लेख में बताया है कि मेगिद्दो जैसी महंगी खुदाई में भी, यह रिपोर्ट करना शर्मनाक है कि मेगिद्दो की खुदाई से निकले मलबे में चरवाहों को गिलगमेश महाकाव्य का क्यूनिफॉर्म पाठ मिला था। आप जानते हैं कि यह आश्चर्यजनक है क्योंकि उत्खनन तकनीक इतनी सावधानी से की जाती है। मुद्दा यह है कि, यदि आपको एक मिट्टी की गोली मिलती है जिस पर कीलाकार निशान हैं, जो कि मिट्टी में दबी हुई है, तो यह बताना बहुत मुश्किल है कि वह मिट्टी की गोली मिट्टी का टुकड़ा है या पत्थर का। संभवतः वहां क्या हुआ था कि वे सामान खोद रहे थे और वह छूट गया और ढेर पर रख दिया गया, फिर बारिश आई और कुछ मिट्टी और गंदगी बह गई और फिर आप देख सकते थे कि यह क्या था। लेकिन किसी भी मामले में , एक बहुत ही महत्वपूर्ण

पाठ, यहां तक कि सावधानीपूर्वक खुदाई की गई जगह पर भी, छूट गया था और मलबे में पाया गया था। तो यह उस तरह की स्थिति है.

हाज़ोर

जॉन गारस्टैंग, जिन्होंने फ़िलिस्तीन में कई स्थानों की खुदाई की, ने 1928 में हज़ोर में अपने काम से निष्कर्ष निकाला कि यह स्थल 13वीं और 14वीं शताब्दी ईसा पूर्व में एक महत्वपूर्ण शहर नहीं था क्योंकि उन्हें कोई माइसीनियन प्रथम मिट्टी के बर्तन नहीं मिले, जो एक निश्चित प्रकार के मिट्टी के बर्तन हैं। . यदि ईसा पूर्व 13वीं से 14वीं शताब्दी के दौरान इस पर कब्जा किया गया होता तो वहां माइसेनियन मिट्टी के बर्तन होने चाहिए थे। यहोशू की पुस्तक कहती है, कि जब इस्राएली यहोशू के नेतृत्व में आए और उत्तर की ओर गए और हासोर में लड़े, तो उन्होंने नगर को नष्ट कर दिया। यह उत्तर का प्रमुख नगर था। यहोशू के समय में इस पर कब्ज़ा किया गया था। गारस्टैंग को कोई माइसेनियन मिट्टी का बर्तन नहीं मिला, इसलिए उन्होंने कहा कि यह उस समय एक महत्वपूर्ण शहर नहीं था। वे अक्सर मिट्टी के बर्तनों का उपयोग पुराने स्तर और कलाकृतियों में करते हैं।

खैर, हाल के दिनों में इस साइट की फिर से खुदाई की गई है या आगे की खुदाई की गई है, और इज़राइली पुरातत्वविद् याडिन को माइसेनियन मिट्टी के बर्तनों से अटे पड़े फर्श मिले हैं। तो आप निष्कर्ष निकालने में देख सकते हैं कि पहली बार क्योंकि उसे कुछ नहीं मिला, उसे अमान्य कर दिया गया क्योंकि बाद में यह पाया गया कि जो चीज़ उसे नहीं मिली थी, वह फिर भी वहीं थी। यादीन को बाद में बहुत सारे माइसेनियन मिट्टी के बर्तन मिले। जहां तक कनानी स्थलों की बात है तो हज़ोर एक बहुत बड़ी साइट है। वहाँ एक ऊपरी शहर और एक निचला शहर है। ऊपरी शहर लगभग 30 एकड़ और निचला शहर लगभग 175 एकड़ है। आप लगभग 200 एकड़ की एक साइट के बारे में बात कर रहे हैं, जहां तक आज शहरों की बात है, यह कोई बहुत बड़ा शहर नहीं है, लेकिन यदि आप ऐसी किसी चीज़ की खुदाई करना चाहते हैं, तो यह एक बड़ा काम है। यादीन ने 30 से अधिक पुरातत्वविदों के साथ काम किया, उनके पास एक बड़ा स्टाफ और सौ या अधिक मजदूरों का दल था। वह चार सीज़न में साइट का 1/400वाँ भाग साफ़ करने में सफल रहा। यह

1955-1958 तक प्रति सीज़न 1/16वाँ सौ है और उन्होंने सुझाव दिया कि इसमें लगभग चार से पाँच महीने के काम में 800 साल लगेंगे, पूरी साइट को साफ़ करने के लिए काम आमतौर पर गर्मियों में किया जाता है। तो जाहिर है कि ऐसा नहीं किया जा रहा है, या इसकी अत्यधिक संभावना नहीं है कि यह कभी भी किया जाएगा। बस उस तरह की समस्या को बड़ी साइटों पर प्रोजेक्ट करें। यदि आप बेबीलोन जाते हैं जो 200 के बजाय 2500 एकड़ को कवर करता है, तो नीनवे 1850 एकड़ को कवर करता है। तो हज़ोर के लिए यादीन के अनुमान के अनुसार बेबीलोन की पूरी तरह से खुदाई करने में लगभग 8000 साल लगेंगे।

5. उत्खनन से प्राप्त सामग्री और विशेषकर शिलालेखों का केवल एक अंश ही प्रकाशित किया गया है

पाँचवाँ, "खुदाई से प्राप्त सामग्री और विशेष रूप से शिलालेखों का केवल एक अंश ही प्रकाशित किया गया है।" उन लोगों की कमी के कारण जिनके पास इन भाषाओं को समझने और अनुवाद करने और प्रकाशित करने का प्रशिक्षण है, विभिन्न लिपियों और भाषाओं में क्यूनिफॉर्म में लिखे गए ग्रंथ हैं। पाठ की खोज और उसके प्रकाशन के बीच काफी समय का अंतराल होता है। ब्रिटिश संग्रहालय द्वारा 1880 के दशक में प्राप्त बेबीलोनियाई राजा की सूची 1954 में प्रकाशित की गई थी, इसलिए आप 1880 से 1954 तक जाते हैं और जब कलाकृतियों को वास्तव में खोदा गया था और जब वे प्रकाशित हुए थे, उसके बीच लगभग 75 वर्ष का समय अंतराल था। लिपिट इश्तार कानून संहिता की खोज 18वीं सदी के अंत में पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय द्वारा की गई थी और यह फिलाडेल्फिया में विश्वविद्यालय संग्रहालय में अलमारियों पर तब तक पड़ी रही जब तक फ्रांसिस आर. स्टील ने 1947 में इस टैबलेट के महत्व को पहचाना और इस कानून संहिता को प्रकाशित नहीं किया। फ्रांसिस आर. स्टील एक इंजील विद्वान हैं। वह 1950 के दशक में विश्वविद्यालय संग्रहालय में क्यूरेटर या सहायक क्यूरेटर थे और बाद में उन्होंने वह पद छोड़ दिया और मुझे लगता है कि वह उत्तरी अफ्रीकी मिशनों के निदेशक थे और मुझे लगता है कि हाल ही में सेवानिवृत्त हुए हैं। लेकिन उन्होंने लिपिट इश्तार कोड का अनुवाद प्रकाशित किया लेकिन उनके आने से पहले यह 60 या 70 वर्षों तक वहां के संग्रहालय में था।

पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के संग्रहालय में अक्काडियन भाषा के वर्तमान क्यूरेटर का कहना है कि कुछ अपवादों को छोड़कर पश्चिमी संग्रहालय अभी भी पुरावशेषों के प्रवाह को नहीं पकड़ पाए हैं। उनके तहखाने और भंडार कक्ष असीरियोलॉजी के क्षेत्र में अनदेखे खजाने से भरे हुए हैं, बेशक हम नई खुदाई के बजाय लगभग पूरी तरह से क्यूनिफॉर्म गोलियों के मौजूदा संग्रह पर निर्भर हैं। हमने संग्रहालयों में रखी सैकड़ों-हजारों गोलियों का इतना छोटा प्रतिशत अवशोषित कर लिया है कि टैबलेट संग्रह में नई खोजें लगभग नियमित हैं, विश्वविद्यालय संग्रहालय में एक का आकार हर दराज में एक आश्चर्य होता है, हमारे पास एकमात्र समस्या यह है कि कौन सी दराज खोलें . सामग्री का ऐसा पिछला लॉग है। धन की कमी और उस सामग्री के साथ काम करने वाले लोगों की विशेषज्ञता की कमी के कारण, इसकी एक बड़ी मात्रा ऐसी है जिस पर ध्यान नहीं दिया गया है, भले ही इसकी खुदाई की गई हो।

सैमुअल क्रेमर पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में सुमेरोलॉजी के प्रोफेसर थे, उनका अनुमान है कि लगभग दस प्रतिशत। खुदाई में प्राप्त 500,000 कीलाकार ग्रंथ अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। संभवतः यह एक अच्छा अनुमान है कि खुदाई की गई सामग्री का लगभग दस प्रतिशत कभी प्रकाशित किया गया है। बेबीलोन के पास मेसोपोटामिया के एक शहर मारी में 25,000 ग्रंथ खोजे गए, और केवल 2,800 प्रकाशित हुए हैं। 1930 और 1936 के बीच एश्नुना में जो गोलियाँ मिलीं उनमें से अधिकांश प्रकाशित नहीं हुई हैं। एश्नुना के कानून प्रकाशित हो चुके हैं लेकिन अधिकांश ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुए हैं। लियोनार्ड वूली ने 1930 के दशक में दक्षिणी मेसोपोटामिया में चाल्डीज़ के उर में खुदाई की। प्रकाशन अभी भी पूरा नहीं हुआ है और अभी भी जारी है। इसलिए हमें यह याद रखना होगा कि उत्खनन से प्राप्त सामग्री और विशेष रूप से शिलालेखों का केवल एक अंश ही प्रकाशित किया गया है।

यामूची के साक्ष्य के घेरे

यामूची इस स्थिति को इस प्रकार चित्रित करती है। वह उसमें बोलता है जिसे वह साक्ष्यों का घेरा कहता है। वह इसे साक्ष्य के तीन चक्रों में विभाजित करता है। आपके पास बाइबिल पाठ है या आपके पास साहित्यिक सामग्री होगी यदि आप बाइबिल पाठ के बारे में बात नहीं कर रहे हैं,

तो आप अन्य शास्त्रीय साहित्यिक ग्रंथों के बारे में बात कर सकते हैं। तब आपके पास साहित्यिक अवशेष और भौतिक अवशेष होते हैं। पुरातात्विक खोज मूल रूप से दो प्रकार के भौतिक अवशेष हैं जो भवन, स्मारक, मिट्टी के बर्तन, मूर्तियाँ, उस प्रकार की चीज़ें और साहित्यिक अवशेष हैं जो विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, कानूनी दस्तावेजों, पत्रों, अदालत के इतिहास, कविताओं, सभी प्रकार की साहित्यिक रचनाओं पर लेख होंगे। अवशेष। कुछ संभावित संयोजनों में, आपके पास ऐसी सामग्री हो सकती है जो अधिकांशतः वही है जो आपको बाइबिल पाठ में मिलेगी जिसे साहित्यिक या भौतिक अवशेषों द्वारा नहीं छुआ गया है, और आपके पास भौतिक अवशेष या साहित्यिक अवशेष हो सकते हैं जिनकी किसी भी बाहरी पुष्टि से कोई लेना-देना नहीं है। साक्ष्य के अन्य घेरे। तब आप भौतिक अवशेषों और बाइबिल ग्रंथों के बीच ओवरलैप कर सकते हैं। किसी दीवार या शहर या किसी भी चीज़ का कुछ संदर्भ। आप इसे भौतिक अवशेषों और बाइबिल पाठ में पाते हैं। साहित्यिक अवशेषों के साथ भी, आप किसी प्रकार की अतिरिक्त बाइबिल लिखित चीज़ पा सकते हैं जो बाइबिल पाठ में मौजूद किसी चीज़ की पुष्टि करती है, शायद एक असीरियन राजा ने कहा था कि उसने एक इज़राइली राजा से श्रद्धांजलि ली थी और बाइबिल पाठ भी यही बात कहता है। जहां आपको साहित्यिक, भौतिक और बाइबिल पाठ दोनों का ओवरलैपिंग मिलेगा वह अपेक्षाकृत दुर्लभ है। अब वे किसी भी प्रकार के सटीक प्रतिशत के विचार से तैयार नहीं किए गए हैं, लेकिन मुझे लगता है कि अवधारणा महत्वपूर्ण है, और विशेष रूप से एक ऐसी चीज़ जो महत्वपूर्ण है कि आप सामग्री की प्रकृति के कारण अधिकांश सामग्री के साथ ओवरलैप की उम्मीद नहीं करते हैं सबूत जिनसे आप निपट रहे हैं। इसलिए अनुशासन की प्रकृति के कारण जहां से हमने शुरुआत की थी वहां वापस जाने के लिए हमारे पास संभावित उपलब्ध साक्ष्यों में से केवल एक अंश के एक अंश का एक अंश ही उपलब्ध होगा, जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं।

1. डेरियस द मेडे - यह मानना एक वैध प्रक्रिया नहीं है कि बाइबिल का कोई भी कथन संदिग्ध है यदि उसे पुरातात्विक खोजों में पुष्टि नहीं मिलती है।

अब इसे ध्यान में रखते हुए, निश्चित रूप से यह मान लेना एक वैध प्रक्रिया नहीं है कि बाइबिल का कोई कथन संदिग्ध है यदि उसे पुरातात्विक निष्कर्षों में पुष्टि नहीं मिलती है। हमें हर

चीज़ के लिए पुष्टि की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, वास्तव में हमें पुष्टि की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इस प्रकार की चीज़ का एक उदाहरण जिसका अक्सर उल्लेख किया जाता है वह यह है कि डैनियल की पुस्तक में आपके पास डेरियस द मेडे का संदर्भ है। डेरियस द मेडे की कोई अतिरिक्त बाइबिल पुष्टि नहीं है। कई आलोचनात्मक विद्वानों का निष्कर्ष यह है कि जिसने भी डैनियल की पुस्तक लिखी, उसे उसका इतिहास नहीं पता था और यह गलत है और डेरियस द मेडे कभी अस्तित्व में नहीं था। अब वास्तव में यह पता चल गया है कि मादी डेरियस कौन था कई सुझाव मिले, कुछ का सुझाव है कि यह साइरस का दूसरा नाम है, कुछ का मानना है कि यह एक गवर्नर था जिसे साइरस ने नियुक्त किया था। इसके लिए विभिन्न प्रस्ताव हैं लेकिन आप देखते हैं कि इसमें शामिल सिद्धांत यह है कि सिर्फ इसलिए कि हमारे पास डेरियस द मेडे के अस्तित्व के लिए अतिरिक्त बाइबिल पुष्टि नहीं है, यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि डेरियस द मेडे का अस्तित्व नहीं था। यामूची बताते हैं कि अगर हमें पोंटियस पिलाट की ऐतिहासिकता को साबित करने के लिए शिलालेखीय साक्ष्य पर निर्भर रहना होता तो हमें 1961 तक इंतजार करना पड़ता जब उनके बारे में पहला पुरालेखीय दस्तावेज कैसरिया में खोजा गया था। इसलिए बिना पुष्टि के हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सकते कि बाइबिल का कोई कथन संदिग्ध है। हेरोदेस महान का पहला अभिलेखीय सत्यापन 1963-65 में खोजा गया था। "आवश्यकता के पुरातात्विक साक्ष्य प्रकृति में बहुत खंडित हैं " पर कोई भी प्रश्न। आप उसके निहितार्थ देखिए.

2. पुरातत्व साक्ष्य की व्याख्या कई मामलों में केवल अस्थायी है

दूसरे, "पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या कई मामलों में केवल अस्थायी है।" अब मुझे लगता है कि यह एक और बहुत महत्वपूर्ण सिद्धांत है क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि पुरातात्विक साक्ष्य की व्याख्या अतिरिक्त साक्ष्य के आलोक में संशोधन या पुनर्व्याख्या के अधीन होती है। इसका मतलब है कि पुरातात्विक साक्ष्यों की व्याख्या के साथ आपको बहुत सावधान रहना होगा। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां सावधानी बेहद महत्वपूर्ण है और मुझे लगता है कि कुछ आलोचकों ने जो दावा किया है कि बाइबिल पुरातात्विक साक्ष्यों से गलत या ऐतिहासिक रूप से अविश्वसनीय है, साथ ही उन चीजों के संबंध में भी इस क्षेत्र में इसका उपयोग होता है, जिनका उपयोग रूढ़िवादी विद्वानों ने

किया है। यह कहना पवित्रशास्त्र की सटीकता को सिद्ध करता है। मुझे लगता है कि यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि विभिन्न प्रकार के पुरातात्विक साक्ष्यों को उनकी व्याख्या के संबंध में निश्चितता की विभिन्न डिग्री के साथ पढ़ा जाना चाहिए। साक्ष्य के प्रकार के आधार पर विभिन्न प्रकार के साक्ष्य और साक्ष्य की व्याख्याएँ होती हैं। साक्ष्य की प्रकृति के आधार पर, यह संदिग्ध से लेकर संभव, संभावित, निश्चित तक, एक संपूर्ण स्पेक्ट्रम तक हो सकता है। अब कुछ बातें बिल्कुल साफ हो सकती हैं. आप एक लिखित बयान प्राप्त कर सकते हैं जिसकी व्याख्या के लिए बहुत कम समय बचा है क्योंकि यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इसमें क्या कहा गया है। लेकिन आप किसी इमारत या संरचना का पता लगा सकते हैं और निश्चित नहीं हो सकते कि यह क्या है। जब कुछ भी नहीं लिखा होता है तो आप ठीक-ठीक नहीं जानते कि इसकी तारीख क्या है, आप नहीं जानते कि इसे किसने बनवाया है, आप नहीं जानते कि उस चीज़ का उद्देश्य क्या था, आपको व्याख्या के बारे में सावधान रहना होगा उस प्रकार की सामग्री का.

1 राजा 9:15, 19 से उदाहरण - सुलैमान के अस्तबल/भंडारगृह

अब यह स्पष्ट करने के लिए कि 1 राजा 9:15 और 19 में हम जबरन श्रम का विवरण पढ़ते हैं। 1 राजा 9:15 राजा सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर, अपना महल, छतें, यरूशलेम और हासोर की शहरपनाह, मगिद्दो और गेजेर को बनाने की आज्ञा दी। श्लोक 19 में, आपने पढ़ा कि उसने इन विभिन्न स्थानों और फिर अपने सभी भण्डार नगरों और अपने रथों और घोड़ों के लिए नगरों का निर्माण किया। उसने यरूशलेम और लेबनान में और उस सारे क्षेत्र में जिस पर उसने शासन किया था, जो कुछ भी उसने बनाना चाहा। अध्याय 10 श्लोक 26 में, आपने पढ़ा, "सुलैमान ने रथ और घोड़े जमा किए। उसके पास 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे, जिन्हें वह रथ नगरों में और यरूशलेम में भी अपने पास रखता था। राजा ने यरूशलेम में चाँदी को पत्थरों जितना सामान्य बनाया, देवदार को तलहटी में गूलर के अंजीर के पेड़ों के बराबर प्रचुर मात्रा में बनाया, सुलैमान के घोड़े मिस्र और क्यू से आयात किए गए थे। शाही व्यापारियों ने उन्हें क्यू से खरीदा, उन्होंने मिस्र से रथों को 600 शेकेल चांदी और एक घोड़े को 150 शेकेल में आयात किया। उन्होंने उन्हें हित्तियों और अरामियों के सभी राजाओं को निर्यात किया। अब उन ग्रंथों से हमें पता चलता है कि सुलैमान

घोड़ों और रथों का व्यापार करता था। वह उस व्यापार में बिचौलिया प्रतीत होता है। और उसने रथों और घोड़ों के साथ अपना सैन्य प्रतिष्ठान बनाया।

मेगिद्दो उनके महत्वपूर्ण निर्माण स्थलों में से एक था। आपने इसे 1 राजा 9:15 में पढ़ा। मेगिद्दो भी, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, उन साइटों में से एक थी जिनकी शिकागो विश्वविद्यालय, ओरिएंटल इंस्टीट्यूट द्वारा सावधानीपूर्वक खुदाई की गई थी। जैसा कि मैंने कुछ मिनट पहले उल्लेख किया था , वे खुदाई पूरे टीले या टेल के नीचे काम करने में सक्षम होने के विचार से 1925 में शुरू हुई थी। उन्होंने पाया कि पहली परत में फ़ारसी और बेबीलोन साम्राज्य के समय के खंडहर थे। वह शीर्ष पर है, लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व। दूसरी परत में असीरियन शासन के साक्ष्य थे, जो लगभग आठवीं शताब्दी के होंगे। और फिर तीसरी और चौथी परतें उत्तरी साम्राज्य पर असीरियन प्रभुत्व से पहले इजरायली काल थीं। कई वर्षों की खुदाई के बाद, वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह इज़राइली काल में सुलैमान का समय था। उस परत में उन्हें कुछ विचित्र इमारतों के अवशेष मिले, जिनकी अनूठी विशेषता पत्थर के खंभों की कतारें थीं। आपने शायद बाइबिल पुरातत्व पर किसी भी हैंडबुक में इसके चित्र देखे होंगे, स्तंभ के शीर्ष के पास छेद वाले पत्थर के खंभों की ये पंक्तियाँ। उत्खनन के निदेशक इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इमारतें अस्तबल थीं और खंभे घोड़ों के लिए खंभे थे, जो एक ही समय में छत के समर्थन के लिए उपयोग किए जाते थे। वे छिद्र ऐसे छेद थे जिनके माध्यम से घोड़ों को उन खंभों से बांधा जा सकता था और साथ ही वे छत के समर्थन के रूप में भी काम करते थे। अब इसे अक्सर मेगिडो में सोलोमन के अस्तबल के रूप में जाना जाता है, आप इसे लगभग किसी भी पुरातात्विक पुस्तिका में पाएंगे। ऐसा कहा जाता है कि यह 1 राजा 9:19 में दर्ज सुलैमान के रथ शहरों, 1 राजा 10:26-29 में सुलैमान के रथों और घोड़ों के व्यापार और 1 राजा 9:15 में मेगिद्दो में सुलैमान के निर्माण कार्य की पुष्टि करता है। अब दिलचस्प बात यह है कि आज पूरी थीसिस सवालों के घेरे में है क्योंकि प्रश्नगत साक्ष्य की पुनर्व्याख्या की जा रही है।

1970 में जेम्स प्रिचर्ड ने एक लेख लिखा था "20वीं सदी के प्रारंभिक निकट पूर्वी पुरातत्व में मेगिद्दो का स्थिर पुनर्मूल्यांकन।" अन्य लोगों के बीच उन्होंने सबूतों की समीक्षा की है और आगे के अध्ययन और अधिक संपूर्ण सबूतों के आधार पर पिछले निष्कर्ष को छोड़ दिया है। परिवर्तन का

कारण कई चीजें थीं, जिनमें से पहला विभिन्न कारणों से संबंधित स्तर की डेटिंग थी जो काफी तकनीकी हो जाती है। प्रिचर्ड और अन्य लोगों ने महसूस किया कि प्रश्न का स्तर अहाब के समय का था न कि सुलैमान के समय का। तो आप सुलैमान के समय के बारे में बात भी नहीं कर रहे हैं। आप देख रहे हैं कि आप साक्ष्य की व्याख्या के इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे हैं, यह कठिन है। फिर इसके अलावा प्रिचर्ड ने अन्य स्थानों पर पाई जाने वाली समान इमारतों के आधार पर प्रस्तावित किया कि इमारतें अस्तबल नहीं थीं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वे भंडार गृह या बैरक थे। छेदों का हिचिंग पोस्ट से कोई लेना-देना नहीं था। इसका संबंध इमारत के ऊपरी हिस्से के संरचनात्मक समर्थन से था। इसलिए मुझे लगता है कि यह इस बात का उदाहरण है कि आपको पुरातात्विक डेटा की व्याख्या में सावधानी क्यों बरतनी चाहिए ।

एक अन्य लेख में प्रिचर्ड कहते हैं, प्रिचर्ड का दूसरा लेख, "बाइबल और आधुनिक छात्रवृत्ति में संस्कृति और इतिहास," पृष्ठ 313 से 324, उस लेख के पृष्ठ 315 पर प्रिचर्ड कहते हैं, "शायद ही कभी ऐतिहासिक निर्णय ज़मीन से सामने आते हैं। वे आमतौर पर पुरातत्वविदों द्वारा देखे गए साक्ष्यों से निकाले जाते हैं। बर्तन, दीवारें, फर्श आदि जैसी मूर्त वस्तुएं इतिहास के लिए केवल इसलिए अर्थ रखती हैं क्योंकि जिस संदर्भ में वे पाई जाती हैं उसे उत्खननकर्ता और उसके सहयोगी द्वारा नियंत्रित, पहचाना और अन्य संदर्भों से जोड़ा जा सकता है। व्याख्या की इस प्रक्रिया में राय, सामान्य ज्ञान और तर्क शामिल हैं। किसी भी पुरातात्विक समीकरण के इन मानवीय चरों को याद रखना एक अनुचित अधिनायकवाद से बचाव है। दूसरे शब्दों में, वह जो कह रहा है वह यह है कि इन ऐतिहासिक प्रश्नों के उत्तर ज़मीन से बाहर नहीं आते। पुरातत्वविदों को सामग्री के साथ काम करना होता है और उन्हें निर्णय लेना होता है, उनकी राय काम में आती है, और बहुत सारे अस्थायी निष्कर्ष निकाले जाते हैं और आपको उन निष्कर्षों का उपयोग करने में सावधानी बरतनी होगी।

सोलोमन की तांबे की खदानें

बाइबिल सामग्री की पुष्टि के संबंध में पुरातत्व की एक परिचित खोज की व्याख्या में बदलाव का एक और उदाहरण है। इसका संबंध उस चीज़ की खोज से है जिसे सोलोमन की कूपर

खदानों और गलाने वाली भट्टियों के नाम से जाना जाता है। 1930 के दशक के उत्तरार्ध में नेल्सन ग्लूक ने एज़ियोनगेबर के पास मृत सागर के दक्षिण में क्षेत्र का पता लगाया । एज़ियोनगेबेर अकाबा या एलाट शहरों के निकट लाल सागर की उत्तरी भुजा के तट पर है । उन्होंने वहां जो पाया वह यह था कि उस क्षेत्र में तांबे और लौह अयस्क की प्रचुर मात्रा थी। उन्होंने पाया कि उस अयस्क का खनन सुलैमान के समय में और उसके बाद भी किया गया था। उन्हें एज़ियोनगेबर के पास उस क्षेत्र के चारों ओर तांबे के सांचों, तांबे के स्लैग के अवशेष मिले । ग्लुक को वहां सोलोमन के बंदरगाह के खंडहर मिलने की उम्मीद थी। यदि आप 1 राजा 9:26 को देखें तो आप पढ़ते हैं कि राजा सुलैमान ने एज़ियोनगेबेर में जहाज़ बनाए थे जो लाल सागर के तट पर एलथ के पास है। लेबनान के हीराम ने अपने नाविकों को सुलैमान के साथ बेड़े में सेवा करने के लिये समुद्र में भेजा। वह उस नौसेना के किसी प्रकार के साक्ष्य की तलाश में था जिसे सुलैमान ने एज़ियोनगेबर में स्थापित किया था । वह नहीं मिला. लेकिन उसे वह मिल गया जिसे वह गलाने वाली भट्टी या रिफाइनरी समझता था। भले ही उसे वहां किसी बंदरगाह का सबूत नहीं मिला, लेकिन यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि सुलैमान तांबा गलाने में शामिल था और शायद वह चीजों को वापस लाने और फिर उन्हें रेगिस्तान के पार यरूशलेम ले जाने के लिए अपने व्यापार में तांबा गलाने का उपयोग कर रहा था, लेकिन हम मैं उसमें से कुछ के बारे में बाद में बताऊंगा। लेकिन जिसे वह गलाने की भट्ठी समझ रहा था, वह तो कुछ और ही निकली लगती है। साक्ष्य की पुनर्व्याख्या. लेकिन हम कल इसके बारे में अधिक जानकारी लेंगे।

प्रतिलेखित: जॉर्डन एलेक्जेंड्रा, जेफ़ ब्राउन, कॉनर ग्रेफ़, जिमी नेवेल और

इयान केनेचटे , समूह संपादक टेड हिल्डेब्रांट

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित

राचेल एशली द्वारा अंतिम संपादन

टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया